चरन निसबत का प्रकरण अन्दरतांई

ए क्यों छोड़े चरन मोमिन, जो हककी वाहेदत।
आए दुनी में जाहेर करी, जो असल हक निसबत।। १ ।।

श्री राजजी महाराज के चरण कमल को मोमिन क्यों छोड़ेंगे? मोमिन श्री राजजी महाराज के ही अंग हैं और उन्होंने दुनियां में आकर अपनी बात को जाहिर किया।

रूहें उतरीं नूर बिलंदसे, कदम नासूतमें भूलत।
तिन पर रसूल होए आइया, जो असल हक निसबत।। २ ।।

रूहें परमधाम से खेल में उतरीं और संसार में आकर श्री राजजी महाराज के चरणों को भूल गईं। उनके वास्ते ही श्री राजजी महाराज रसूल बनकर दुनियां में आए जो असल हक की निसबत हैं।

रूहें अर्स भूलीं नासूत में, ताए हक रमूजें लिखत।
सो सब मोमिन समझहीं, जो असल हक निसबत।। ३ ।।

रूहें संसार में आकर परमधाम को भूल गईं। उन्हें श्री राजजी महाराज सन्देश लिखकर भेज रहे हैं। उन सन्देशों को मोमिन ही समझेंगे जो श्री राजजी महाराज की अंगना हैं।

रूहें कदम भूली नासूत में, हक ताए भेजे इसारत।
ताको हादी केहे समझावहीं, जो असल हक निसबत।। ४ ।।

श्री राजजी महाराज के चरण कमलों को रूहें माया में आकर भूल गई हैं। उन्हें श्री राजजी महाराज इशारतों में चिट्ठियां लिख रहे हैं। जिन इशारतों को हादी श्री प्राणनाथजी महाराज कहकर मोमिनों को समझाते हैं जो श्री राजजी महाराज के अंग हैं।

रूहें अर्स की कदम भूलियां, तिन पर रूह अपनी भेजत।
अर्स बातें केहे समझावहीं, जो असल हक निसबत।। ५ ।।

रूहें श्री राजजी के चरण कमलों को भूल गई हैं। उनके वास्ते ही श्री राजजी महाराज ने अपनी रूह श्री श्यामाजी महारानी को भेजा है, जो परमधाम की बातें कहकर मोमिनों को समझाते हैं।

फरामोस हुइयां लाहूत से, रूहअल्ला संदेसे देवत।
ए मेहेर लेवें मोमिन, जो असल हक निसबत।। ६ ।।

यह मोमिन परमधाम से फरामोशी में आ गए हैं। उनको श्री श्यामा महारानी आकर श्री राजजी महाराज का सन्देश दे रहे हैं। इन सन्देशों को श्री राजजी की अंगना (मोमिन) मेहर से ले रहे हैं।

खिताब हादी सिर तो हुआ, जो फुरमान और न कोई खोलत।
हक कदम हिरदे मोमिनों, जो असल हक निसबत।। ७ ।।

श्री प्राणनाथजी को इमाम मेंहदी का खिताब इसलिए हुआ कि कुरान के छिपे रहस्य खुदा के बिना कोई खोल नहीं सकता था, जो श्री प्राणनाथजी ने आकर खोले। श्री राजजी महाराज के चरण मोमिनों के दिल में हैं जो परमधाम की अंगना हैं।

Nijanand App

रूहें भूलियां खिलवत खेल में, ताए रूहअल्ला इलम ल्यावत।
सो कायम करे त्रैलोक को, जो असल हक निसबत।। ८ ।।

रूहें खेल में आकर मूल-मिलावा को भूल गई हैं। उनको श्री श्यामाजी महारानी आकर जागृत बुद्धि का ज्ञान देती हैं। अब मोमिन उस ज्ञान से चौदह तबकों को अखण्ड मुक्ति देंगे जो श्री राजजी की अंगना हैं।

इस्क रब्द हुआ अर्स में, तो रूहें इत देह धरत।
रूहें चरन तो पकड़े, जो असल हक निसबत।। ९ ।।

परमधाम के इश्क रब्द की वार्तालाप के कारण ही रूहों ने संसार में आकर तन धारण किए। अब श्री राजजी की अंगना होने के कारण ही श्री राजजी महाराज के चरण कमलों को पकड़ा।

आए कदम दिल मोमिन, जाको सब्द न पोहोंचे सिफत।
हकें अर्स दिल तो कह्या, जो असल हक निसबत।। १० ।।

श्री राजजी महाराज के चरण मोमिनों के दिल में आए हैं जिनकी महिमा कही नहीं जा सकती। इनके दिल को श्री राजजी महाराज ने अपना अर्श कहा है, क्योंकि यह परमधाम की अंगना हैं।

ए बरनन हुकमें तो किया, जो जाहेर करनी खिलवत।
ए कदम रूहें तो पकड़ें, जो असल हक निसबत।। ११ ।।

श्री राजजी महाराज के हुकम ने मूल-मिलावा की इस हकीकत को जाहिर करने के लिए यह वर्णन किया है। श्री राजजी महाराज की अंगना मोमिन इसलिए श्री राजजी महाराज के चरणों को पकड़ती हैं।

हकें आए किया अर्स दिलको, बीच ल्याए कदम न्यामत।
सिर हुकमें हुज्जत तो लई, जो असल हक निसबत।। १२ ।।

श्री राजजी महाराज ने आकर मोमिनों के दिल में अपने चरण रखे और अपना अर्श बनाया, तो मोमिनों ने श्री राजजी महाराज की अंगना होने का दावा लिया।

अर्स मोहोल दिल को किया, आए बैठी हक सूरत।
ए अर्स मेहेर तो भई, जो असल हक निसबत।। १३ ।।

श्री राजजी महाराज के स्वरूप ने मोमिनों के दिल को अर्श किया और मोमिनों के दिल में आकर साक्षात् बैठ गए। यह मेहर मोमिनों पर इसलिए हुई कि वह श्री राजजी की अंगना हैं।

इन कदमों मेहेर मुझपर करी, देखाए दई वाहेदत।
तो इलम दिया बेसक, जो असल हक निसबत।। १४ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि श्री राजजी महाराज ने मेहर कर मेरे अन्दर विराजमान होकर मुझे मूल-मिलावा दिखाया और अपनी अंगना जानकर जागृत बुद्धि का बेशक ज्ञान दिया है।

मोमिनों पाई बेसकी, सो इन कदमों की बरकत।
सो क्यों छूटें मोमिन से, जो असल हक निसबत।। १५ ।।

मोमिनों के श्री राजजी महाराज के चरणों से ही संशय मिटे हैं। वह चरण अब मोमिनों से कैसे हट सकते हैं जो श्री राजजी की अंगना हैं।

Nijanand App

इन चरनों किया अर्स दिलको, दिल बोलें सुध परत।
रूहें तो लेवें महंमद सिफायत, जो असल हक निसबत।। १६ ।।

इन चरणों ने मोमिनों के दिल को अर्श किया है और अब मोमिनों के बोलने से पता चलता है कि इनके अन्दर श्री राजजी बैठे हैं। यह मोमिन श्री राजजी की अंगना हैं और यही मोमिन रसूल साहब की गवाही को लेंगे।

रूहें कदम पकड़ें हक के दिलमें, पैठ इस्क ठौर ढूंढ़त।
दिल मोमिन अर्स तो कह्या, जो असल हक निसबत।। १७ ।।

रूहों ने श्री राजजी महाराज के चरणों को अपने दिल में पकड़ रखा है और अब इश्क की खोज कर रही हैं। श्री राजजी महाराज की अंगना होने से ही इनके दिल को अर्श कहा है।

ए कदम ले दिल मोमिन, अर्ससे ना निकसत।
ए रूहें जानें अर्स बारीकियां, जो असल हक निसबत।। १८ ।।

श्री राजजी महाराज के चरण अपने दिल में लेकर दिन-रात परमधाम का चितवन करते हैं। श्री राजजी महाराज की अंगना होने से परमधाम की खास बातों को मोमिन ही समझते हैं।

रूहें सिरपर कदम चढ़ाएके, अर्स मोहोलों में मालत।
सब हक गुझ रूहें जानहीं, जो असल हक निसबत।। १९ ।।

इन चरण कमलों को मोमिन अपने सिर पर लेकर परमधाम के महलों में घूमते हैं। रूहें श्री राजजी महाराज के सब दिल के रहस्यों को अंगना होने के कारण जानती हैं।

ले चरन दिल अर्स में, सब गलियों में फिरत।
सब सुध होवे अर्सकी, जो असल हक निसबत।। २० ।।

श्री राजजी महाराज के चरणों को दिल में लेकर मोमिन परमधाम की गली-गली में घूमते हैं, क्योंकि श्री राजजी की अंगना होने से इनको परमधाम की सब खबर हैं।

रूहें नैन पुतलियों बीच में, हक कदम राखत।
एक हुए दिल अर्स रूहें, जो असल हक निसबत।। २१ ।।

श्री राजजी महाराज के चरण कमलों को मोमिन अपनी नयन की पुतलियों में बसाकर रखते हैं और श्री राजजी की अंगना होने के कारण से सब रूहें एक दिल हो गए।

दिल अर्स किया इन कदमों, इतहीं बैठे कर भिस्त।
ए न्यारे निमख न होवहीं, जो असल हक निसबत।। २२ ।।

इन चरण कमलों से ही श्री राजजी महाराज मोमिन के दिल को अपना ठिकाना बनाकर बैठे हैं। अब श्री राजजी महाराज अपनी अंगना मोमिनों से एक पल के लिए भी अलग नहीं हो सकते।

गुन केते कहूं इन कदमके, जिन अर्स अखंड किया इत।
ए कदम ताले तिनके, जो असल हक निसबत।। २३ ।।

श्री राजजी महाराज के चरण कमल के गुण कहां तक कहूं? जिन्होंने मोमिनों के दिल को अपना अखण्ड घर बना लिया है। मोमिन श्री राजजी महाराज की अंगना हैं, इसलिए इन चरण कमलों पर उन्हीं का अधिकार है।

Nijanand App

तिन भागकी मैं क्या कहूं, ए जिन दिल कदम बसत।
धंन धंन कदम धंन ए दिल, जो असल हक निसबत।। २४ ।।

जिनके दिल में श्री राजजी महाराज के कदम रहते हैं, उनके इस अधिकार को मैं क्या कहूं? श्री राजजी महाराज के चरण कमल और मोमिनों के दिल धन्य धन्य हैं, क्योंकि यह मोमिन श्री राजजी की ही अंगना हैं।

कई मलकूत वारूं तिन खाक पर, जिन दिल ए कदम आवत।
और दिल अर्स न होवहीं, बिना असल हक निसबत।। २५ ।।

जिन मोमिनों के दिल में यह कदम आ गए हैं, उनकी चरण रज पाकर कई बैकुण्ठ के राज्य कुर्बान कर दूं। इनके अतिरिक्त और किसी का दिल अर्श नहीं हो सकता, क्योंकि यह श्री राजजी की अंगना हैं।

दिल सांच ले सरीयत चले, या पाक होए ले तरीकत।
दिल अर्स न होए बिना मोमिन, जाकी असल हक निसबत।। २६ ।।

मोमिन श्री राजजी महाराज की अंगना हैं। इनके बिना भले दुनियां वाले सच्चे दिल से शरीयत पर चलें या पाक होकर तरीकत पर चलें, उनके दिल में श्री राजजी महाराज का अर्श नहीं हो सकता।

कोई करो सब जिमिएं सिजदा, पालो अरकान लग कयामत।
पर ए कदम न आवें दिलमें, बिना असल हक निसबत।। २७ ।।

भले दुनियां वाले सारी जमीन पर सिजदा करें और सारी उम्र बावन अरकानों (मुसलमानों के नियम) को पालें, परन्तु श्री राजजी महाराज की अंगना, जो मोमिन हैं, उनके सिवाय श्री राजजी के चरण किसी के दिल में नहीं आ सकते।

तेहेत्तर फिरके महंमदके, तामें एक को हक हिदायत।
और नारी एक नाजी कह्या, जाकी असल हक निसबत।। २८ ।।

मुहम्मद साहब ने अपने तिहत्तर फिरके बताए हैं। उनमें से एक नाजी फिरके को ही हक की हिदायत होगी। लिखा है यही श्री राजजी महाराज की अंगना होगी। बाकी बहत्तर नारी अर्थात् दोजखी कहे हैं।

उत्तम होए खट करम करो, आचार करो विधोगत।
ब्रह्म चरन न आवें ब्रह्मसृष्ट बिना, जाकी ब्रह्मसों निसबत।। २९ ।।

जाहिरी लोग नहा धोकर षट कर्म वाले और आचार विचार से रहे, परन्तु श्री राजजी महाराज की अंगनाओं के बिना धनी के चरण और किसी के दिल में नहीं जा सकते।

खटसास्त्र पढ़ो कांड तीनों, करम निहकरम विधोगत।
ब्रह्म चरन न आवें ब्रह्मसृष्ट बिना, जाकी ब्रह्मसों निसबत।। ३० ।।

छः शास्त्रों को पढ़ो या कर्म उपासना और ज्ञान के बताए हुए तरीके से कर्म करो या जिनको निषेध बताया है न करो, परन्तु श्री राजजी महाराज की अंगनाओं के बिना श्री राजजी के चरण किसी को प्राप्त नहीं होंगे।

नव अंगों पालो नवधा, ल्यो बैकुंठ चार मुगत।
ए चरन न आवें ब्रह्मसृष्ट बिना, जाकी ब्रह्मसों निसबत।। ३१ ।।

भले कोई नवधा प्रकार की भक्ति करके बैकुण्ठ में चार प्रकार की मुक्ति प्राप्त कर ले, परन्तु मोमिन जो पारब्रह्म की अंगना हैं, उनके बिना पारब्रह्म के चरण किसी को प्राप्त नहीं हो सकते।

Nijanand App

वेद सास्त्र पुरान पढ़ो, सब पैंडे देखो प्रापत।
ए चरन न आवें ब्रह्मसृष्ट बिना, जाकी ब्रह्मसों निसबत।।३२।।

भले कोई वेद, पुराण, शास्त्र पढ़ ले और सब धर्म पैंडों को खोज ले पर ब्रह्मसृष्टि जो श्री राजजी की अंगना हैं, पारब्रह्म के चरण उनके सिवाय किसी को प्राप्त नहीं हो सकते।

कोई वेद पांचों मुख पढ़ो, कई त्रैगुन जात पढ़त।
पर ए चरन न आवें ब्रह्मसृष्ट बिना, जाकी ब्रह्मसों निसबत।।३३।।

भले कोई पांच वेद मुख से पढ़ ले, कई त्रिदेव भी पढ़ते रहें, परन्तु पारब्रह्म के चरण कमल उनकी अंगना जो मोमिन हैं, उनके बिना किसी को प्राप्त नहीं हो सकते।

ब्रह्मसृष्ट कही वेदने, ब्रह्म जैसी तदोगत।
तौल न कोई इनके, जाकी ब्रह्मसों निसबत।।३४।।

वेदों ने ब्रह्मसृष्टि को ब्रह्म के समान ही कहा है। इनके समान कोई और हो ही नहीं सकता, क्योंकि यह पारब्रह्म की अंगना हैं, इसलिए इनके बिना उस पारब्रह्म के चरण कमल किसी को प्राप्त नहीं हो सकते।

सुकजी आए इन वास्ते, ले किताब भागवत।
ए चरन न आवें ब्रह्मसृष्ट बिना, जाकी ब्रह्मसों निसबत।।३५।।

शुकदेवजी भी भागवत की किताब लेकर आए, परन्तु यह चरण ब्रह्मसृष्टि जो श्री राजजी की अंगना हैं, उनके बिना किसी को प्राप्त नहीं हो सकते।

ब्रह्म ने भेजी परमहंस पर, वेद अस्तुत बंदोबस्त।
ए ब्रह्म चरन क्यों छोड़हीं, जाकी ब्रह्मसों निसबत।।३६।।

पारब्रह्म ने परमहंसों (मोमिन) के वास्ते वेद के वचन बड़े इन्तजाम से भेजे हैं, परन्तु जो पारब्रह्म की अंगना हैं वह इन चरणों को कैसे छोड़ेंगे?

कही आई उपनिषद इनपे, पूर्व रिखी कहे जित।
धाम बका पाया इनोंने, जाकी ब्रह्मसों निसबत।।३७।।

छः शास्त्रों को रचने वाले सात ऋषियों ने भी कहा कि यह शास्त्र ब्रह्मसृष्टियों के वास्ते ही हैं, क्योंकि अखण्ड परमधाम की जानकारी इन ब्रह्म मुनियों को है, इसलिए इनके बिना और किसी को चरण नहीं प्राप्त हो सकते। यह पारब्रह्म की अंगना हैं।

ब्रह्मसृष्ट मोमिन कहे, रूहें लेवें वेद कतेब विगत।
ए समझ चरन ग्रहें ब्रह्मके, जाकी ब्रह्मसों निसबत।।३८।।

ब्रह्मसृष्टि मोमिन वेदों और कुरान की हकीकत को लेंगे। इन रहस्यों को समझकर रूहें पारब्रह्म के चरण ग्रहण करेंगी, क्योंकि यह पारब्रह्म की अंगना हैं।

ब्रह्मसृष्ट रूहें नाम दोए, अर्स रूहें ए जानत।
दोऊ जान चरन ग्रहें एकै, जाकी ब्रह्मसों निसबत।।३९।।

अर्श की रूहें इस हकीकत को जानती हैं कि ब्रह्मसृष्टि और मोमिन रूहों के दो नाम कहे हैं। इस बात की हकीकत रूहें ही समझकर चरणों को ग्रहण करेंगी, क्योंकि वह पारब्रह्म की अंगना हैं।

Nijanand App

पढ़े वेद कतेब को, जोग कसब ना पोहोंचत।
दिल अर्स किया जिन कदमों, ए न आवें बिना हक निसबत।। ४० ।।

भले कोई वेद कतेब पढ़ ले और योगाभ्यास कर ले, परन्तु श्री राजजी महाराज की अंगनाओं के बिना किसी को चरण नहीं मिल सकते, क्योंकि यह श्री राजजी की अंगना हैं।

दिल अर्स कह्या जो मोमिन, सो दिल नाजी पाक उमत।
और इलाज ना इलम कोई, बिना असल हक निसबत।। ४१ ।।

रूहों के दिल को पारब्रह्म का अर्श कहा है और यही पाक नाजी फिरका है। कोई साधना या दुनियां के इलम से पारब्रह्म के चरण प्राप्त नहीं कर सकते। चरण तो जो पारब्रह्म की अंगना हैं, उनको मिलेंगे।

इलम लदुन्नी भेजिया, सो मोमिन ए परखत।
परख चरन ग्रहें हक के, जाकी असल हक निसबत।। ४२ ।।

श्री राजजी महाराज ने जागृत बुद्धि की अखण्ड वाणी भेजी। सो मोमिन ही इसको पहचानेंगे। जो श्री राजजी की अंगना हैं। उनके बिना किसी को पारब्रह्म के चरण प्राप्त नहीं हो सकते।

हक हादी की मेहेर से, भिस्त आठ होसी आखिरत।
पर ए चरन न आवें दिलमें, बिना असल हक निसबत।। ४३ ।।

श्री राजश्यामाजी की मेहर से वक्त आखिरत के जीवों को आठ तरह से अखण्ड मुक्ति तो मिलेगी, परन्तु श्री राजजी महाराज के चरण उनकी अंगनाओं के बिना किसी को नहीं मिलेंगे।

महंमद सूरत हकी बिना, द्वार खुले ना हकीकत।
ए कदम पावें दिल औलिया, जाकी असल हक निसबत।। ४४ ।।

मुहम्मद साहब की हकी सूरत श्री प्राणनाथजी के बिना इन छिपे रहस्य को और कोई खोल नहीं सकेगा। पारब्रह्म के चरण खुदा के औलिया (मोमिन) ही प्राप्त करेंगे। वह श्री राजजी की अंगना हैं।

ए कदम आए जिन दिल में, तित आई हक सूरत।
ए चौदे तबक पावें नहीं, बिना असल हक निसबत।। ४५ ।।

श्री राजजी महाराज के चरण कमल जिसके दिल में आए, वहां श्री राजजी महाराज स्वयं विराजमान हो गए, परन्तु बिना उनकी अंगनाओं के यह चरण चौदह लोकों में कोई प्राप्त नहीं कर सकता।

दिल मोमिन क्यों अर्स कह्या, ए दुनी ना एता विचारत।
ए विचार तो उपजे, जो होए हक निसबत।। ४६ ।।

मोमिनों के दिल को अर्श क्यों कहा है, दुनियां इसका विचार नहीं करती। यह विचार तो उनके दिल में तब आवे जब वह श्री राजजी की अंगना हों।

रूहें अर्स बुधजी बिना, छल का पावे न कोई कित।
ए सहूर भी दिल न आवहीं, बिना असल हक निसबत।। ४७ ।।

श्री प्राणनाथजी के बिना अर्श की रूहें श्री राजजी महाराज के चरण कमलों को, दुनियां का कोई भी कहीं पर नहीं पा सकता, क्योंकि श्री राजजी महाराज की अंगनाओं के बिना यह विचार किसी को आएगा ही नहीं।

Nijanand App

रूहअल्ला दज्जाल को मारसी, छोड़ावसी उमत।
कर एक दीन चरन देखावहीं, जाकी असल हक निसबत।।४८।।

श्री श्यामा महारानी वक्त आखिरत को जागृत बुद्धि की तारतम वाणी से दज्जाल को मारकर अपने मोमिनों को इनके बन्धन से छुड़ाएंगे और सारी दुनियां को एक पारब्रह्म का पूजक बनाकर निजानन्द सम्प्रदाय में लाकर श्री राजजी के दर्शन कराएंगे जो श्री राजजी की अंगनाएं हैं।

अर्स सूरत पर सिजदा, करसी मेंहेंदी इमामत।
कदम ग्रहे देखावहीं, जाकी असल हक निसबत।।४९।।

इमाम मेंहदी श्री प्राणनाथजी महाराज ही दुनियां को कर्मकाण्ड (शरीयत) से छुड़ाकर अक्षरातीत पारब्रह्म की पहचान कराके सिजदा कराएंगे, क्योंकि प्राणनाथजी श्री राजजी महाराज के ही स्वरूप हैं।

दोऊ आए बीच हिंदुअन के, जैसे कह्या हजरत।
ए बेवरा सोई समझहीं, जाकी असल हक निसबत।।५०।।

रसूल साहब के कहे अनुसार मलकी और हकी सूरत ईसा रूह अल्लाह श्यामा महारानी और इमाम मेंहदी श्री प्राणनाथजी महाराज दोनों हिन्दुओं में आएंगे। यह विवरण ब्रह्मसृष्टि जो श्री राजजी की अंगना हैं, वही समझेंगे।

अर्स कह्या दिल मोमिन, ले दिल अर्स गलियों खेलत।
सो पावें रूहें लाहूती, जाकी असल हक निसबत।।५१।।

मोमिनों के दिल को अर्श इसलिए कहा है, क्योंकि वह श्री राजजी महाराज के चरण कमलों को अपने दिल में लेकर परमधाम की गलियों में खेलते हैं। इन चरणों को लाहूत (परमधाम) में रहने वाली जो श्री राजजी की अंगना हैं, वही प्राप्त करेंगी।

ए कदम पावें रूहें लाहूती, नहीं औरों की किसमत।
ए सोई पावें हक बारिकियां, जाकी असल हक निसबत।।५२।।

श्री राजजी महाराज के चरणों को परमधाम की रूहें जो धाम धनी की अंगना हैं, पाएंगी। यह चरण दुनियां वालों की किस्मत में नहीं हैं। श्री राजजी महाराज की खास बातों को (बारीक बातों को) जो श्री राजजी महाराज की अंगनाएं हैं, वही पाएंगी।

अहेल किताब एही कहे, एही पावें हक मारफत।
एही आसिक होवें मासूक की, जाकी असल हक निसबत।।५३।।

इन मोमिनों को कुरान का वारिस कहा है, क्योंकि श्री राजजी के मारफत ज्ञान से यह उस कुरान के भेद खोलेंगे। यह ही माशूक श्री राजजी महाराज के आशिक हैं, क्योंकि यह उनकी अंगना हैं।

जो रूहें उतरी अर्स से, सो कदम ले अर्स पोहोंचत।
देसी भिस्त सबन को, जाकी असल हक निसबत।।५४।।

जो रूहें अर्श से उतरी हैं, वह श्री राजजी के चरण लेकर वापस परमधाम पहुंचेंगी। सारी दुनियां को अखण्ड मुक्ति वही देंगे जो श्री राजजी महाराज की अंगना हैं।

Nijanand App

जो रूहें कही लाहूती, इजने इत उतरत।
सो पकड़ें कदम इस्क सों, जाकी असल हक निसबत।।५५ ।।

जो रूहें परमधाम की कही हैं वह श्री राजजी महाराज के हुकम से खेल में उतरी हैं। वह इश्क से श्री राजजी महाराज के चरण कमलों को पकड़ेंगी, क्योंकि वह श्री राजजी की अंगना हैं।

रूहें अर्स रब्दें इत आइयां, देखो कौन कदम ग्रहे जीतत।
सों क्यों बिछुरें इन कदम सों, जाकी असल हक निसबत।।५६ ।।

रूहें परमधाम से इश्क रब्द का वार्तालाप करके खेल में आई हैं। अब देखो उनमें से कौन श्री राजजी महाराज के चरण कमलों को ग्रहण करने में जीतता है जो श्री राजजी की अंगना हैं वह इन चरणों से कभी अलग नहीं होंगी।

याही रब्दें इत आइयां, लेने पिउ का विरहा लज्जत।
सो पाए कदम क्यों छोड़हीं, जाकी असल हक निसबत।।५७ ।।

इसी इश्क रब्द के कारण ही रूहें यहां आई हैं, ताकि धनी के वियोग की लज्जत ले सकें। वह रूहें जो श्री राजजी की अंगना हैं, अब चरण प्राप्त कर कैसे छोड़ेंगी?

ए रब्द अर्स खिलवत का, रूहें इस्क अंग गलित।
सो क्यों छोड़ें पांउं पकड़ें, जाकी असल हक निसबत।।५८ ।।

यह इस्क रब्द परमधाम का है, जिस इश्क में रूहें सदा गलित रहती थीं। अब वह श्री राजजी के चरण ग्रहण कर कैसे छोड़ेंगी?

रूहें इन कदम के वास्ते, जीवतेही मरत।
सो क्यों छोड़ें प्यारे पांउं को, जाकी असल हक निसबत।।५९ ।।

रूहें इन चरण कमलों के वास्ते जीते ही कुर्बानी देती हैं। जो श्री राजजी की अंगना हैं वह अपने प्यारे प्रीतम के चरण कमलों को कैसे छोड़ें?

याही कदम के वास्ते, रूहें जल बल खाक होवत।
तो दिल आए कदम क्यों छूटहीं, जाकी असल हक निसबत।।६० ।।

रूहें इन चरणों के वास्ते ही अपने आपको फना कर देती हैं तो जो श्री राजजी की अंगना हैं वह दिल में आए हुए इन चरणों को कैसे छोड़ेंगी?

रूहें होवें जिन किन खिलके, हक प्रगटे सुनत।
आए पकड़ें कदम पलमें, जाकी असल हक निसबत।।६१ ।।

परमधाम की रूहें इस दुनियां में भले किसी भी जाति में आई होंगी, श्री राजजी महाराज का प्रगट होना सुनकर एक पल के अन्दर दुनियां को छोड़कर उनके चरणों में आ जाएंगी, क्योंकि वह श्री राजजी की अंगना हैं।

जब आखिर हक जाहेर सुनें, तब खिन में रूहें दौड़त।
सो क्यों रहें कदम पकड़े बिना, जाकी असल हक निसबत।।६२ ।।

जब आखिरत के समय श्री प्राणनाथजी प्रगट हो गए हैं, सुनकर रूहें एक पल में दौड़कर आएंगी। वह श्री राजजी महाराज के चरणों को पकड़े बिना कैसे रह सकती हैं? क्योंकि वह श्री राजजी की अंगना हैं।

Nijanand App

जब इमाम आए सुने, तब मोमिन रेहे ना सकत।
दौड़ के कदम पकड़ें, जाकी असल हक निसबत।। ६३ ।।

इमाम मेंहदी श्री प्राणनाथजी आ गए हैं। यह सुनकर मोमिन कैसे रह सकते हैं। वह दौड़कर उनके चरण पकड़ लेंगे, क्योंकि यह उनकी अंगना हैं।

मलकूत बैकुंठ वास्ते, दुनी पहाड़ से गिरत।
तो रूहें हक कदम क्यों छोड़हीं, जाकी असल हक निसबत।। ६४ ।।

यह दुनियां वाले मलकूत (बैकुण्ठ) के वास्ते पहाड़ों से गिरने की कुर्बानी देते हैं, तो रूहें जो श्री राजजी महाराज की अंगना हैं, वह उनके चरणों को कैसे छोड़ेंगी?

मलकूत बैकुंठ वास्ते, दुनी सिर लेत करवत।
तो रूहें हक कदम क्यों छोड़हीं, जाकी असल हक निसबत।। ६५ ।।

यह दुनियां वाले मलकूत (बैकुण्ठ) के वास्ते काशी में करवत लेकर कुर्बानी देते हैं, तो जो श्री राजजी महाराज की अंगना हैं, वह उनके चरण कैसे छोड़ सकती हैं।

मलकूत बैकुंठ वास्ते, दुनियां आग पीवत।
तो रूहें हक कदम क्यों छोड़हीं, जाकी असल हक निसबत।। ६६ ।।

यह दुनियां वाले बैकुण्ठ के वास्ते अग्निपान करते हैं, तो जो श्री राजजी की अंगना हैं, वह उनके चरण कमलों के बिना कैसे रह सकती हैं?

मलकूत बैकुंठ वास्ते, दुनी भैरव झंपावत।
तो रूहें हक कदम क्यों छोड़हीं, जाकी असल हक निसबत।। ६७ ।।

यह दुनियां वाले बैकुण्ठ के वास्ते वैष्णव देवी के पहाड़ से झांप खाकर गिरते हैं, तो जो श्री राजजी महाराज की अंगना है वह चरणों के बिना कैसे रह सकती हैं?

मलकूत बैकुंठ वास्ते, दुनी हेममें गलत।
तो रूहें हक कदम क्यों छोड़हीं, जाकी असल हक निसबत।। ६८ ।।

दुनियां वाले बैकुण्ठ के वास्ते हिमालय की बर्फ में जाकर गलते हैं (पांडव केदार नाथ गए थे), तो जो श्री राजजी की अंगना हैं वह उनके चरणों को कैसे छोड़ सकती हैं?

और इलाज जो कई करो, पर पावे ना बिना किसमत।
सो हक कदम ताले मोमिन, जाकी असल हक निसबत।। ६९ ।।

और कितने ही उपाय कर लो, पर मूल निसबत के बिना पारब्रह्म के चरण नहीं मिलते। यह चरण मोमिन ही ले सकते हैं, क्योंकि वह श्री राजजी की अंगना हैं।

ए बिन मोमिन कदम न पाइए, जो करे कई कोट मेहेनत।
ए मोमिन अर्स अजीम के, जाकी असल हक निसबत।। ७० ।।

मोमिनों के बिना इन चरणों को नहीं पा सकता चाहे कोई करोड़ों उपाय कर ले। यह मोमिन ही परमधाम के चरण पा सकते हैं, क्योंकि वह श्री राजजी की अंगना हैं।

Nijanand App

रूहें अर्स की कहें वेद कतेब, बिन कुंजी क्योंए न पाइयत।
सो रूहअल्ला बेसक करी, जाकी असल हक निसबत।।७१ ।।

रूहें परमधाम की हैं, ऐसा वेद कतेब में लिखा है। यह भेद जागृत बुद्धि के ज्ञान की कुंजी तारतम के बिना कोई नहीं खोल सकता। रूह अल्लाह श्री श्यामा महारानी ने तारतम ज्ञान से रूहें जो श्री राजजी की अंगना हैं, उनके संशय मिटा दिए।

हक कदम दिल मोमिन, देख देख रूह भीजत।
एक पाउपल ना छोड़हीं, जाकी असल हक निसबत।।७२ ।।

श्री राजजी महाराज के चरण मोमिनों के दिल में हैं। उनको देखकर परमधाम की रूहें गलितगात हैं और एक पल मात्र के वास्ते भी चरण नहीं छोड़तीं, क्योंकि वह श्री राजजी की अंगना हैं।

ए कदम रूहें दिल लेयके, देह झूठी उड़ावत।
कोई दिन रखें वास्ते लज्जत, जाकी असल हक निसबत।।७३ ।।

रूहें श्री राजजी महाराज के चरण कमलों को दिल में लेकर झूठे तन को समाप्त कर देती हैं। कुछ दिन पारब्रह्म ने इनको संसार में रोक रखा है, क्योंकि यह इश्क की लज्जत लेने यहां आई हैं, जो श्री राजजी महाराज की अंगना हैं।

मोमिन आए अर्स से, दुनी क्या जाने ए गत।
ए कदम ताले ब्रह्मसृष्ट के, जाकी असल हक निसबत।।७४ ।।

मोमिन परमधाम से आए हैं, दुनियां इस बात को कैसे समझे? श्री राजजी के चरण कमल केवल ब्रह्मसृष्टि के वास्ते हैं, क्योंकि वह हक श्री राजजी की अंगना हैं।

रूहें खाना पीना रोजा सिजदा, इन कदमों हज-ज्यारत।
और चौदे तबक उड़ावहीं, जाकी असल हक निसबत।।७५ ।।

रूहों का खाना, पीना, रोजा, रमजान, पांच वक्त की नमाज तथा तीर्थ यात्रा श्री राजजी के चरणों में ही हैं। इनके अतिरिक्त वह चौदह तबकों की बादशाही को रद्द कर देंगे, क्योंकि वह श्री राजजी की अंगना हैं।

ए चरन पेहेचान होए मोमिनों, वाही को प्यारे लगत।
ना तो बुरा न चाहे कोई आपको, पर क्या करे बिना हक निसबत।।७६ ।।

यह चरण मोमिनों को ही प्यारे लगते हैं जिन्हें इनकी पहचान है। वरना अपने आपका बुरा कोई नहीं चाहता, परन्तु बिना निसबत के क्या करें?

पाए बिछुरे पिउ परदेस में, बीच हक न डारें हरकत।
ए करी इस्क परीछा वास्ते, पर ना छूटे हक निसबत।।७७ ।।

अपने बिछुड़े हुए धनी के चरण विदेश (इस संसार) में मिल गए। अब मोमिनों से यह चरण किसी तरह से नहीं छूटेंगे। चाहे श्री राजजी महाराज इश्क की परीक्षा के वास्ते कितनी भी अड़चनें बीच में डालें।

Nijanand App

जिन परदेस में पांउं पकड़े, ज्यों बिछुरे आए मिलत।
सो मोमिन छोड़ें क्यों कदम को, जाकी असल हक निसबत।।७८ ।।

परदेश में रूहों ने धनी के चरण पकड़ रखे हैं। उन्होंने यह चरण इतने जोर से (ईमान से) पकड़ रखे हैं जैसे कोई बिछुड़े हुए बाद में मिलते हैं। मोमिन जो श्री राजजी की अंगना हैं वह इन चरणों को कैसे छोड़ेंगे?

जो बिछुड़ के आए मिले, सो पलक ना छोड़ सकत।
सो रूहें पाए चरन पिउ के, जाकी असल हक निसबत।।७९ ।।

मोमिन श्री राजजी के चरणों से बिछुड़कर यहां आए और इस संसार में फिर मिले, इसलिए वह, जो श्री राजजी की अंगना हैं, इन चरणों को पल के लिए भी नहीं छोड़ सकते।

अर्सें सब्द न पोहोंचे त्रैलोकका, सो दिल मोमिन अर्स कहावत।
इन कदमों बड़ाई दिलको दई, जाकी असल हक निसबत।।८० ।।

अर्श शब्द की जानकारी (पहचान) चौदह लोकों को नहीं है। वह अर्श मोमिनों का दिल कहा है। यह साहेबी श्री राजजी के चरण कमलों से ही मिली है, जिनसे मोमिनों का सच्चा सम्बन्ध है, क्योंकि वह श्री राजजी की अंगना हैं।

दिल मोमिन एही पेहेचान, दिल कदम छोड़ न चलत।
तो पाई अर्स बुजरकी, जो थी असल हक निसबत।।८१ ।।

मोमिनों के दिल की यही पहचान है कि उनके दिल श्री राजजी के चरणों को नहीं छोड़ सकते। इनके दिल को अर्श की बड़ाई इसलिए मिली है, क्योंकि यह श्री राजजी महाराज की अंगना हैं।

ए कदम नूरजमाल के, आई दिल मोमिन लज्जत।
सो मोमिन अरवा अर्स के, जाकी असल हक निसबत।।८२ ।।

श्री राजजी महाराज के चरण कमलों की लज्जत मोमिनों के दिल में आई है। वही मोमिन परमधाम की रूहें हैं जो श्री राजजी की अंगना हैं।

ए चरन दिल का जीव है, तिन बिन जीव क्यों जीवत।
तो हकें अर्स कह्या दिलको, जो असल हक निसबत।।८३ ।।

श्री राजजी महाराज के चरण कमल रूहों के तन में जीव के समान हैं। जैसे तन जीव के बिना नहीं रह सकता, वैसे रूहें जो श्री राजजी महाराज की अंगना हैं उनके चरण कमलों के बिना कैसे रह सकती हैं, इसलिए श्री राजजी ने इनके दिल को अर्श कहा है।

जो निसबती दिल चरनके, तामें जरा न तफावत।
ए कदम रूहें ल्याई दुनीमें, जाकी असल हक निसबत।।८४ ।।

जिन मोमिनों के दिल में धनी के चरण हैं, उनके तन और श्री राजजी के चरणों में कोई फर्क नहीं है। यह चरण कमल रूहें ही दुनियां में लाई हैं, क्योंकि रूहें श्री राजजी की अंगना हैं।

हक जाहेर बीच दुनीके, रूहें समझके समझावत।
हुआ फुरमाया रसूलका, तो जाहेर हुई हक निसबत।।८५ ।।

परमधाम के मोमिन श्री राजजी महाराज के स्वरूप को समझकर दुनियां को बताते हैं। रसूल साहब ने जैसा कहा था कि खुदा और उसकी उम्मत में कुछ फर्क नहीं होगा। वह हकीकत अब जाहिर हो गई।

Nijanand App

चौदे तबक करसी कायम, ए जो झूठे खाकी बुत।
मोमिन बरकत इन कदमों, जाकी असल हक निसबत।। ८६ ।।

अब मोमिन जो श्री राजजी की अंगना हैं, धनी के चरणों की कृपा से चौदह लोकों के ब्रह्माण्ड के झूठे जीवों को अखण्ड मुक्ति देंगे।

सबों भिस्त दे घरों आवसी, रूहें कदम ग्रहें बड़ी मत।
अर्स के तन जो मोमिन, जाकी असल हक निसबत।। ८७ ।।

यह रूहें जागृत बुद्धि की अखण्ड वाणी से श्री राजजी के चरण कमलों को प्राप्त करके सबको अखण्ड मुक्ति प्रदान कर अपने घर परमधाम वापस आएंगे। मोमिनों की परआतम श्री राजजी महाराज की अंगना हैं।

ए काम किया सब हुकमें, अव्वल बीच आखिरत।
हक बका द्वार खोलिया, महामत ले आए निसबत।। ८८ ।।

यह सब काम श्री राजजी महाराज के हुकम ने तीन सूरतें धारण कर अव्वल रसूल साहब बसरी, दूसरे बीच में श्यामा महारानी (श्री देवचन्द्रजी) मलकी और आखिर हकी सूरत इमाम मेंहदी श्री प्राणनाथजी महाराज ने अखण्ड परमधाम के दरवाजे खोलकर अपने मोमिनों को जो श्री राजजी महाराज की अंगना हैं घर वापस ले आए।

|| प्रकरण || ७ || चौपाई || ४४३ ||

कदम परिकरमा निसबत

उमर जात प्यारी सुपने, निस दिन पिउ जपत।
लाल कदम न छोड़ें मोमिन, जाकी असल हक निसबत।। १ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि मोमिनों की रात-दिन संसार में धनी का नाम जपते-जपते ही उम्र बीत रही है। जो रूहें श्री राजजी महाराज की अंगना हैं, वह इन चरण कमलों की लाल तली को नहीं छोड़ सकते।

मांग लई प्यारी उमर, ए जो रब्द के बखत।
लाल पांउं तली छोड़ें क्यों मोमिन, जाकी असल हक निसबत।। २ ।।

इस्क रब्द के वार्तालाप के समय मोमिनों ने श्री राजजी महाराज से इस संसार को मांगा था। अब जो श्री राजजी महाराज की अंगना हैं, वह उनके चरणों की लाल तली और एड़ियों को छोड़ नहीं सकते।

पांउं निस दिन छोड़ें ना मोमिन, सुपने या सोवत।
सो क्यों छोड़ें बेसक जागे, जाकी असल हक निसबत।। ३ ।।

रात-दिन सपने में या नींद में श्री राजजी के चरणों को मोमिन नहीं छोड़ते तो अब यह श्री राजजी महाराज की अखण्ड वाणी से निस्सन्देह हो गए हैं, तो जो श्री राजजी की अंगना हैं, वह जागकर इन चरणों को कैसे छोड़ें?

Nijanand App